INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HINDI MEDIUM

राजस्थान

BSTC

(Pre. D.El. ED)

HANDWRITTEN NOTES

भाग -3 हिंदी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान BSTC

(Pre.D.El.ED)

भाग – 3

हिंदी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान BSTC (Pre. D.El.Ed.)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को "**प्रारंभिक शिक्षा विभाग –बीकानेर**" द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान BSTC (Pre. D.El.Ed.)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/l6dgy4

Online Order करें - https://bit.ly/bstc-notes

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

हिंदी		
क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	हिंदी वर्णमाला	1
2.	शब्द प्रकार	4
3.	सन्धि और सन्धि विच्छेद	13
4.	प्रत्यय एवं उपसर्ग	20
5.	सामासिक पदों की रचना और समास - विग्रह	27
6.	संज्ञा	45
7.	लिंग	50
8.	काल	53
9.	अव्यय (अविकारी शब्द)	55

10.	पर्यायवाची शब्द	60
11.	विलोम शब्द	66
12.	अनेकार्थक शब्द	76
13.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	78
14.	शब्द – शुद्धि	88
15.	शब्द-युग्म (समरूपी भिन्नार्थक शब्द)	93
16.	वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध	106
17.	वाक्य – शुद्धि	112
18.	वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द	118
19.	वचन	127

अध्याय – 2

शब्द प्रकार

❖ तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज

तत्सम एवं तद्भव

शब्द – भेद

बनावट के आधार पर

रूढ़ | यौगिक | योग रूढ़

उत्पत्ति के आधार पर

तत्सम | तद्भव | देशज | विदेशी | संकर

परम्परागत तत्सम

जो शब्द संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध हैं, वे परंपरागत तत्सम कहे जाते हैं।

निर्मित तत्सम शब्द

"जो शब्द नए विचारों और व्यापारों की अभिव्यक्ति करने के लिए संस्कृत के व्याकरण के अनुसार समय – समय पर बना लिए गए है"

1. **तत्सम** : ' तत्सम ' (तत् + सम) शब्द का अर्थ है – 'उसके समान' अर्थात् संस्कृत के समान। हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से आए हैं और आज भी उसी रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। अत: संस्कृत के ऐसे शब्द जिसे हम ज्यों- का – त्यों प्रयोग में लाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे – अग्नि,वायु, माता, पिता, प्रकाश , पत्र सूर्य आदि।
2. **तद्भव शब्द** – ' तद्भव ' शब्द का अर्थ है- ' उससे होना ' ; अर्थात् वे शब्द जो ' स्त्रोत भाषा ' के शब्दों से विकसित हुए हैं। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर पालि – प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी तक पहुंचे हैं , अत : इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है , जैसे – 'दही' शब्द 'कान्ह' शब्द (कृष्ण) से विकसित होकर हिन्दी में आए हैं ऐसे शब्दों को '**तद्भव शब्द**' कहा जाता है।

तत्सम	–	**तद्भव**
यकृत	–	जिगर
यशोदा	–	जसोदा
रज्जु	–	रस्सी

रुक्ष	–	रुखा	सूचिका	–	साई
रुद्ध	–	रुँधा	स्वर्णकार	–	सुनार
शेष	–	रिस	सौभाग्य	–	सुहाग
रुष्ट	–	रुठा	स्वजन	–	सजन
रुदन	–	रोना	षोडश	–	सोलह
लंग	–	लंगड़ा	हिंगु	–	हींग
लक्ष	–	लाख	हीरक	–	हीरा
लवंग	–	लौंग	हरित	–	हरा
लोमशा	–	लोमड़ी	हर्ष	–	हरख
लवणता	–	लुनाई	हिंदोल	–	हिंडोरा
वंश	–	बाँस	हृदय	–	हिय
वर्षण	–	बरसना	हास्य	–	हँसी
व्याघ्र	–	बाघ	क्षीर	–	खार
वीरवर्णिनी	–	बैरबानी	शाटी	–	साड़ी
वाष्प	–	भाप	श्याली	–	साली
वज्रांग	–	बजरंग	शून्य	–	सूना
वत्स	–	बच्चा \ बछड़ा	श्रावण	–	सावण
वट	–	बड़	श्रृंगार	–	सिंगार
वरयात्रा	–	बरात	श्रेढी	–	सीढ़ी
वातकि	–	बैंगन	श्रृंगाटक	–	सिंघाडा
वृश्चिक	–	बिच्छु	सरोवर	–	सरवर
वक	–	बगुला	स्तम्भ	–	खंभा
शर्करा	–	शक्कर	स्नेह	–	नेह
श्मसान	–	मसान	स्पर्श	–	परस
श्वश्रु	–	सास	स्वर्ण	–	सोना
शूकर	–	सूअर	समर्पय	–	सौंप
श्वसुर	–	ससुर	स्त्रोत	–	सोता
शैया	–	सेज	सूत्र	–	सूत
शुष्ठि	–	सोठ	सघट्ट	–	सुघड़
शुष्क	–	सुखा	स्वामी	–	साई
शुण्ड	–	सूँड	सत्य	–	सच
शुक	–	सुआ	सूर्य	–	सूरज
शिक्षा	–	सीख	हस्तिनी	–	हथनी
श्रृंग	–	सींग	हस्ति	–	हाथी
श्रृंखला	–	सांकल	अस्थि	–	हड्डी
श्रृगाल	–	सियार	हरिद्रा	–	हल्दी
श्रेष्ठी	–	सेठ	हट्ट	–	हाट
सप्तशती	–	सतसई	होलिका	–	होली
सर्षप	–	सरसों	हंडी	–	हाँडी
स्वप्न	–	सपना	क्षत्रिय	–	खत्री
साक्षी	–	साखी	क्षति	–	छति
सपत्नी	–	सौत	क्षीण	–	छीन
संधि	–	सेंध	क्षेत्र	–	खेत

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अष्ट	–	आठ
अश्रु	–	आँसू
अखिल	–	आखा
अग्नि	–	आग
अम्लिका	–	इमली
आर्द्रक	–	अचरज
आश्रय	–	आसरा
आखेट	–	अहेर
आशा	–	आस
आदर्शिका	–	आरसी
आशिष	–	असीस
इयत	–	इतना
उत्साह	–	उछाह
उलूक	–	उल्लू
उज्वल	–	उजला
उद्गत	–	उगना
उद्वर्तन	–	उबटन
उष्ट्र	–	ऊँट
ओष्ठ	–	ओठ
उलूखल	–	ओखली
ऋक्ष	–	रीछ
कंकण	–	कंगन
कच्छप	–	कछुआ
कृत्यगृह	–	कचहरी
कर्तन	–	करतन
कुपुत्र	–	कपूत
कर्पास	–	कपास
कल्लोल	–	कलोल
क्लेश	–	कलेश
काष्ठ	–	काठ
कार्य	–	काज \कारज
कज्जल	–	काजल
कर्ण	–	कान
केतक	–	केवड़ा
कार्तिक	–	कातिक

नोट :- गतवर्ष पूछे गये प्रश्न

तत्सम		**तद्भव**
वार्ता	–	बात
अमृत	–	अमिय
काष्ठ	–	काठ
चतुष्पलिका	–	चौकी
कर्तन	–	काटना
हरिद्रा	–	हल्दी
गर्दभ	–	गधा
पक्ष	–	पाख
जम्बू	–	जामुन
वत्स	–	बच्चा
ईक्षु	–	ईख
महिषि	–	भैंस
गोमय	–	गोबर
उष्ट्र	–	ऊँट
मौक्तिक	–	मोती
अक्षोट	–	अखरोट
घृष्ट	–	ढीठ
अट्टालिका	–	अटारी
भ्रमर	–	भँवरा
नारिकेल	–	नारियल
श्रृंग	–	सींग
लवण	–	नोन
वर्तिका	–	बाटी
विभूति	–	भभूत
स्नेह	–	नेह
पृष्ठ	–	पीठ
स्कन्ध	–	कंधा
मुद्रिका	–	मुदरी
खंडगृह	–	खंडहर
द्विवर	–	देवर
अद्य	–	आज
खर्पर	–	खप्पड़
दधि	–	दही
घोटक	–	घोड़ा
पर्यंक	–	पलंग
दिवस	–	दिन
पाद	–	पैर
सपत्नी	–	सौत
अग्निष्ठिका	–	अंगीठी
ग्रामीण	–	गँवार
आश्चर्य	–	अचरज
बधिर	–	बहरा
धूम	–	धुआँ
लिंगपट्ट	–	लँगोट
श्रृंगाल	–	सियार
चत्वार	–	चबूतरा
ऊर्ण	–	ऊन
अंगप्रोक्षा	–	अँगोछा

भक्त	–	भगत
निम्ब	–	नीम
अश्रु	–	आँसू
प्रस्तर	–	पत्थर
चित्रकार	–	चितेरा
यज्ञोपवीत	–	जेनेऊ
पुष्कर	–	पोखर
नापित	–	नाई
निमन्त्रण	–	नेवता
पत्रिका	–	पाती
प्राघूर्ण	–	पाहुन
पाणि	–	पानी
वासगृह	–	बसेरा
वर्कर	–	बकरा
भागिनेय	–	भाँजा
मंडूक	–	मेढ़क
कच्छक	–	कछुआ
कंकती	–	कंघी
गरमी	–	घाम
तिलक	–	टिका
पुत्रवधु	–	पतोहु
पार्श्वअस्थि	–	पड़ोसी
मर्कटी	–	मकड़ी
कूप	–	कुआँ
सूचिका	–	सूई
मिष्टी	–	मिठाई
अत्र	–	यहाँ
स्वसुरालय	–	ससुराल

देशज / देसी : 'देशज' (देश+ज) शब्द का अर्थ है- देश में जमा | अतः ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, देशज या देशी शब्द कहलाते हैं; **जैसे** – लोटा , कटोरा , घोटाला , माथा , जगमाता , गडबड , लात , चटपट , पानी , खुसर – पुसर , चिड़िया , झुग्गी , पों – पों , ठठेरा , टोटी , थप्पड़ , कायं – कायं , डिबिया धड़ाम , बक – बक , गाड़ी , ठक – ठक , लड़का , ठन – ठन , खिड़की , सर – सर , टक्कर , खिचड़ी , डकारा , खटपट , जूता , खर्राटा , ऊटपटांग , पगड़ी , टुच्चा , काका , तेंदुआ , बाबा , ठेठ , जूता, थर्रा , खाखरा , धेवर , छानी , लगदी , कलाई , झिलमिल , बियाना , झंडा, भिंडी , मुक्का , सरसों, बाजरा , गड़बड़ , धड़ाम , डकार , टक्कर , चसक, कदली इत्यादि |

3. विदेशज / विदेशी / आगत : ' विदेशज ' (विदेश+ज) शब्द का अर्थ है –' विदेश में जन्मा ' | 'आगत' शब्द का अर्थ है आया हुआ हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे है जो हैं तो विदेशी मूल के, पर परस्पर संपर्क के कारण यहाँ प्रचलित हो गए हैं | अतः अन्य देश की भाषा से आए हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते हैं विदेशज शब्दों में से कुछ को ज्यो-का-त्यों अपना लिया गया है (ऑर्डर, कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट इत्यादि) और कुछ को हिन्दीकरण (तद्भवीकरण) कर के अपनाया गया है |

(ऑफिसर > अफसर, लैनटर्न > लालटेन, हॉस्पिटल > अस्पताल, कैप्टेन > कप्तान, गोडाउन > गोदाम, जेन्युअरि > जनवरी) इत्यादि|

अरबी शब्द

अक्ल, अज़ब, अजाएब, अजीब, असर, अहमक, अल्ला, अदा, आदत, आदमी, आखिर, आसार, इलाज, इनाम, इस्तीफा, इज्जत, इजलास, इमारत, ईमान, उम्र, एहसान, औरत, औलाद, औसत, कर्ज, कमाल, कब्र, कदम, कसूर, कसर, कसम, कसरत, किला, किस्त , किस्मत, किस्सा, किताब, कुर्सी, खत, खत्म, खबर, खराब, ख्याल, गरीब, गैर, जलसा, जिस्म, जाहिल, जहाज, जवाब, जनाब, जालिम, जिहन, तकदीर, तकिया, तरफ, तमाम, तकाजा, तुर्की, तजुरबा, तमाशा, तारीख, दगा, दफा, दफ्तर, दवा, दल्लाल, दावा, दान, दावत, दाखिल, दिक,दीन, दुआ, दुकान, नकद, नकल, नहर, नशा, नतीजा, चाल, फकीर, फायदा, फैसला, बाकी, मवाद, मदद, मल्लाह, मजबूर, मरंजी, मशहूर, मजमून, मतलब, मालूम, मामूली, मात, मानी, मिसाल, मुद्दई, मुसाफिर, मुंसिफ, मुकदमा, मौका, मौलवी, मौसम, यतीम, राय, लफ्ज, लहजा, लायक, लिफाफा, लियाकत, लिहाज, वकील, वहम, वारिस, शराब, हक, हद, हरामी, हमला, हवालात, हाजिर, हाशिया, हल, हाकिम, हिसाब, हिम्मत, हैजा, हौसला इत्यादि|

फारसी शब्द

अदा, अफसोस, आतिशबाजी, आबरू, आबदार, आमदनी, आराम, आफत, आवाज, आईना, उम्मीद, कद (कद्द भी), किशमिश, कुश्ती, कमीना, कबूतर कूचा, खुद, खामोश, खुश, खुराक, खूब, खरगोश, गज, गर्द,, गुम, गल्ला, गोला, गुलबन्द, गरम, गिरह, गवाह, गुल, गुलाब, गोश्त, चरखा, चश्मा, चादर चाबुक, चिराग, चेहरा, चूँकि, चाशनी, जहर, जंग,

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (मे, पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और दिगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते है।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(1) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद	-	**विग्रह**
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो/जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप मे/जो उचित हो

यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में/ (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो / प्रत्येक दोनों
रोम– रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे

जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला/वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू – शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहैतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा – ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

उपन्यास सम्राट	-	उपन्यास का सम्राट
रत्नाकार	-	रत्नों का आकार
चिताभस्म	-	चिता की भस्म
आश्रमवासियों	-	आश्रम के वासियों
मानवसत्य	-	मानव का सत्य
प्राणीलोक	-	प्राणियों का लोक
करुणा भाव	-	करुणा का भाव
मैना दंपत्ति	-	मैना की दंपत्ति
शिरीष-वृक्ष	-	शिरीष का वृक्ष
कथा-दशक	-	कथा का दशक
प्राणपण	-	जान की बाजी
कलाकार	-	कला का जानकार
विनाश-लीलाओं	-	विनाश की लीलाओं
राजभवन	-	राजा का भवन
मुख्यमंत्री निवास	-	मुख्यमंत्री का निवास
गृह स्वामिनी	-	ग्रह की स्वामिनी
पुलिस चौकी	-	पुलिस की चौकी
स्वतंत्रता सैनानी	-	स्वतंत्रता के सैनानी
परिकथा	-	परियों की कथा
कन्यादान	-	कन्या का दान
धर्म-संकट	-	धर्म का संकट
अर्थशास्त्र	-	अर्थ का शास्त्र
मर्दजात	-	मर्द की जात
साहित्यचर्चा	-	साहित्य की चर्चा
स्त्री सुबोधिनी	-	स्त्री की सुबोधिनी
जन्मपत्र	-	जन्म का पत्र
माटीखाना	-	मिट्टी की खान
प्रमाणपत्र	-	प्रमाण पत्र का
पत्नीवियोग	-	पत्नी का वियोग
आज्ञानुसार	-	आज्ञा के अनुसार
कायदानुसार	-	कायदे के अनुसार
मंत्रिपरिषद	-	मंत्रियों का परिषद
प्रेमसागर	-	प्रेम का सागर
राजमाता	-	राजा की माता
आमचूर	-	आम का चूर्ण
रामचरित	-	राम का चरित

[VI] <u>अधिकरण तत्पुरुष समास (सप्तमी तत्पुरुष)</u> :- जिस तत्पुरुष समास में अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है, अधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

जैसे :-

समस्त पद	-	**विग्रह**
शोकमग्न	-	शोक में मग्न
पुरुषोत्तम	-	पुरुषों में उत्तम
आपबीती	-	आप पर बीती
गृहप्रवेश	-	गृह में प्रवेश
लोकप्रिय	-	लोक में प्रिय
धर्मवीर	-	धर्म में वीर
कलाश्रेष्ठ	-	कला में श्रेष्ठ
आनंदमग्न	-	आनंद में मग्न (मग्न = डूबा हुआ)
कर्मनिरत	-	कर्म में निरत
क्षत्रियाधम	-	क्षत्रियों में अधम
दानवीर	-	दान में वीर
नरोत्तम	-	नरों में उत्तम
वनवास	-	वन में वास
ग्रामवास	-	ग्राम में वास
स्नेहमग्न	-	स्नेह में मग्न
युद्धवीर	-	युद्ध में वीर
ध्यानमग्न	-	ध्यान में मग्न
घुड़सवार	-	घोड़े पर सवार
कुलश्रेष्ठ	-	कुल में श्रेष्ठ
शरणागत	-	शरण में आगत (आगत = आया हुआ)
कानाफूसी	-	कान में फुसफुसाहट
जलमग्न	-	जल में मग्न
कार्यकुशल	-	कार्य में कुशल
सिरदर्द	-	सिर में दर्द
दही बड़ा	-	दही में डूबा

हुआ बड़ा

देशाटन - देश में अटन (भ्रमण)

नीति-निपुण - नीति में निपुण

हथकड़ी - हाथ में पहनने वाली कड़ी

घर बैठे - घर में बैठे

वनमानुष - वन में निवास करने वाले मानुष

जीवदया - जीवों पर दया

घृतान्न - घी में पका हुआ अन्न

कविपुंगल - कवियों में श्रेष्ठ

नोट :-

तत्पुरुष समास के उपयुक्त प्रकार के अलावा पाँच अन्य प्रकार भी होते हैं, जो नीचे दिए गए हैं।

1) नञ तत्पुरुष समास :-

जिस समास के पूर्व पद में निषेधसूचक अथवा नकारात्मक शब्द अ , अन् , न , ना , गैर आदि लगे हों, उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे :-

समस्त पद		विग्रह
अनादर	-	न आदर
अनहोनी	-	न होनी / नहीं जो होनी चाहिए
अन्याय	-	न्याय का ना होना
अनागत	-	न आगत
अधर्म	-	धर्म हीन / नहीं जो धर्म
अनादि	-	आदि रहित
अस्थिर	-	न स्थिर
अज्ञान	-	न ज्ञान
अनिच्छा	-	न इच्छा
अपूर्ण	-	न पूर्ण
अनर्थ	-	अर्थ हीन / नहीं हो जो अर्थ के / बिना अर्थ के
अनश्वर	-	न नश्वर
नीरस	-	न रस
अब्राह्मण	-	न ब्राह्मण
अनुपस्थित	-	न उपस्थित
अज्ञात	-	न ज्ञात
असत्य	-	न सत्य
अनदेखी	-	न देखी
नास्तिक	-	न आस्तिक
अयोग्य	-	न योग्य
असुंदर	-	न सुंदर
अनाथ	-	बिना नाथ के
असंभव	-	न संभव / नहीं हो जो संभव
अनावश्यक	-	न आवश्यक / नहीं हो जो आवश्यक
ना पसंद	-	न पसंद
नावाजिब	-	न वाजिब

[3] कर्मधारय समास (Appositional Compound):-

जिस समास पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद तथा उत्तर पद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्यसंबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।

आसानी से समझने के लिए कर्मधारय समास को दो प्रकारों में बांटा गया है।

इस प्रकार में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद संज्ञा या सर्वनाम अर्थात विशेष्य होता है।

पहचान:- कर्मधारय समास के विग्रह में "जो" शब्द आता है।

समस्त पद		विग्रह
महाकवि	-	महान है जो कवि

(व्याख्या :- यहां महान विशेषण तथा कवि विशेष्य है)

महापुरुष	-	महान है जो पुरुष
महौषध	-	महान है जो औषध

3. यद्यपि यह काम कठिन है तथापि तुम इसे कर सकते हो।

8. **विस्मयादि बोधक पदबन्ध** - किसी वाक्य में हर्ष, शोक, विस्मय, लज्य, ग्लानि आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्द 'विस्मयादिबोधक पदबन्ध' कहलाते हैं। जैसे –

1. अहा! आज तो मिठाईयाँ बन रही हैं।
2. हाँ! मैं भी तो सही कहता हूँ।
3. ऐ! तुम फर्स्ट आ गए।

अध्याय – 17

वाक्य - शुद्धि

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

शब्द शुद्धि के साथ वाक्य शुद्धि का भी भाषा में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य में अनावश्यक शब्द प्रयोग से, अनुपयुक्त शब्द के प्रयुक्त होने से, सही क्रम या अन्विति न होने से, लिंग, वचन, कारक का सही प्रयोग नहीं होने से, सही सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है। जो अर्थ के साथ भाषा सौन्दर्य को हानि पहुंचाता है।

1. अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि :

समान अर्थ वाले दो शब्दों या विपरीत अर्थ वाले शब्दों के एक साथ प्रयोग होने तथा एक ही शब्द की पुनरावृत्ति पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः किसी एक अनावश्यक शब्द को हटाकर वाक्य शुद्ध बनाया जा सकता है। इनमें दोनों शब्दों में से किसी एक को हटाना होता है। अतः दोनों रूपों में वाक्य सही हो सकता है। यहाँ एक रूप ही देंगे।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. मैं प्रातः काल के समय पढ़ता हूँ।	1. मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ।
2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी।	2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड दिया।
3. इसके बाद फिर क्या हुआ ?	3. इसके बाद क्या हुआ ?
4. यह कैसे सम्भव हो सकता है ?	4. यह कैसे संभव है ?
5. मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है।	5. मेरे पास केवल एक घड़ी है।
6. तुम वापस लौट जाओ।	6. तुम वापस जाओ।
7. सारे देश भर में यह बात फैल गई।	7. सारे देश में यह बात फैल गई।
8. वह सचिवालय कार्यालय में लिपिक है।	8. वह सचिवालय में लिपिक है।
9. विन्ध्याचल पर्वत हिमालय से प्राचीन है।	9.विन्ध्याचल हिमालय से प्राचीन है।

10. नौजवान युवक युवतियों को आगे आना चाहिए।	10. नौजवानों को आगे आना चाहिए।
11. किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	11. किसी और से परामर्श लीजिए।
12. सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए।	12. सप्रमाण उत्तर दीजिए।
13. गुलामी की दासता बुरी है।	13. गुलामी बुरी है।
14. प्रशान्त बहुत सज्जन पुरुष है।	14. प्रशान्त बहुत सज्जन है।
15. शायद आज वर्षा अवश्य आयेगी।	15. शायद आज वर्षा आयेगी।
16. शायद वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।	16. वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।
17. कृपया शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें।	17. कृपया शीघ्र उत्तर दें।
18. वह गुनगुने गरम पानी से नहाता है।	18. वह गुनगुने पानी से नहाता है।
19. गरम आग लाओ।	19. आग लाओ।
20. तुम सबसे सुन्दरतम हो।	20. तुम सबसे सुन्दर हो।

2. <u>अनुपयुक्त शब्द के कारण :</u>

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयुक्त हो जाने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है अतः अनुपयुक्त शब्द हटाकर उस स्थान पर उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. सीता राम की स्त्री थी।	1. सीता राम की पत्नी थी।
2. रातभर गधे भौंकते रहे।	2. रातभर कुत्ते भौंकते रहे।
3. कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है।	3. कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है।
4. बन्दूक एक शस्त्र है।	4. बन्दूक एक अस्त्र है।
5. आकाश में तारे चमक रहे हैं।	5. आकाश में तारे टिमटिमा रहे हैं।
6. आकाश में झण्डा लहरा रहा है।	6. आकाश में झण्डा फहरा रहा है।
7. उसकी भाषा देवनागरी है।	7. उसकी लिपि देवनागरी है।
8. वह दही जमा रही है।	8. वह दूध जमा रही है।
9. साहित्य व समाज का घोर संबंध है।	9. साहित्य व समाज का घनिष्ठ संबंध है।
10. उसके गले में बेड़ियाँ पड़ गई।	10. उसके पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई।
11. हाथी पर काठी बाँध दो।	11. हाथी पर हौदा रख दो।
12. चिन्ता एक भयंकर व्याधि है।	12. चिन्ता एक भयंकर आधि है।
13. गगन बहुत ऊँचा है।	13. गगन बहुत विशाल है।
14. वह पाँव से जूता निकाल रहा है।	14. वह पाँव से जूता उतार रहा है।
15. कृपया मेरी सौभाग्यवती कन्या के विवाह में पधारें।	15. कृपया मेरी सौभाग्याकांक्षिणी कन्या के विवाह में पधारें।
16. उसे अपनी योग्यता पर अहंकार है।	16. उसे अपनी योग्यता पर गर्व है।
17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार भेंट किए।	17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार प्रदान किए।
18. कृष्ण ने कंस की हत्या की।	18. कृष्ण ने कंस का वध किया।
19. विख्यात आतंकवादी मारा गया।	19. कुख्यात आतंकवादी मारा गया।

3. <u>लिंग सम्बन्धी :</u>

वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अनुसार उचित लिंग का प्रयोग न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**
1. यह एकांकी बहुत अच्छी है।	1. यह एकांकी बहुत अच्छा है।
2. मेरे मित्र की पत्नी विद्वान है।	2. मेरे मित्र की पत्नी विदुषी है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. अधिकतर हिन्दी के लेखक निर्धन हैं।	1. हिन्दी के अधिकतर लेखक निर्धन हैं।
2. यहाँ पर शुद्ध गाय का घी मिलता है।	2. यहाँ पर गाय का शुद्ध घी मिलता है।
3. शीतल गन्ने का रस पीजिए।	3. गन्ने का शीतल रस पीजिए।
4. हनुमान पक्के राम के भक्त थे।	4. हनुमान राम के पक्के भक्त थे।
5. एक खाने की थाली लगाओ।	5. खाने की एक थाली लगाओ।
6. स्वामी दयानन्द का देश आभारी रहेगा।	6. देश स्वामी दयानन्द का आभारी रहेगा।
7. उपयोजना मंत्री आज आयेंगे।	7. योजना उपमंत्री आज आयेंगे।
8. कुत्ते को राम डण्डे से मारता है।	8. राम डण्डे से कुत्ते को मारता है।
9. आपको मैं कुछ नहीं कह सकता।	9. मैं आपको कुछ नहीं कह सकता।
10. हवा ठण्डी चल रही है।	10. ठण्डी हवा चल रही है।
11. सीता के गले में एक मोतियों का हार है।	11. सीता के गले में मोतियों का एक हार है।
12. अध्यापक जी भूगोल छात्रों को पढ़ा रहे हैं।	12. अध्यापक जी छात्रों को भूगोल पढ़ा रहे हैं।
13. वे पुराने कपड़े के व्यापारी हैं।	13. वे कपड़े के पुराने व्यापारी हैं।
14. कई रेलवे के कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई।	14. रेलवे के कई कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई।
15. मैंने बहते हुए पत्ते को देखा।	15. मैंने पत्ते को बहते हुए देखा।
16. वास्तव में तुम चतुर हो।	16. तुम वास्तव में चतुर हो।
17. बच्चे को धोकर फल खिलाओ।	17. फल धोकर बच्चे को खिलाओ।
18. वहाँ मुफ्त आँखों का आपरेशन होगा।	18. वहाँ आँखों का मुफ्त आपरेशन होगा।
19. बैर अपनों से अच्छा नहीं।	19. अपनों से बैर अच्छा नहीं।

6. <u>कारक सम्बन्धी :- </u> वाक्य में प्रयुक्त कारक के अनुसार उचित विभक्ति न लगने से, अनावश्यक विभक्ति लगने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. पाँच बजने को दस मिनट है।	1. पाँच बजने में दस मिनट हैं।
2. उसके सिर में घने बाल हैं।	2. उसके सिर पर घने बाल हैं।
3. देशभक्त बड़ी बड़ी यातनाओं को सहते हैं।	3. देशभक्त बड़ी-बड़ी यातनाएँ सहते हैं।
4. अपने बच्चे चरित्रवान् बनाओ।	4. अपने बच्चों को चरित्रवान् बनाओ।
5. दवा रोग को समूल से नष्ट करती है।	5. दवा रोग को समूल नष्ट करती है।
6. अपराधी को रस्सी बाँधकर ले गए।	6. अपराधी को रस्सी से बाँधकर ले गये।
7. मेरी राय से आप चले जाइए।	7. मेरी राय में आप चले जाइए।
8. उसने पत्नी का गला घोंट कर मार डाला।	8. उसने पत्नी का गला घोंट डाला।
9. बन्दर पेड़ में बैठे हैं।	9. बन्दर पेड़ पर बैठे हैं।
10. सीता घर नहीं है।	10. सीता घर पर नहीं है।
11. उसकी दृष्टि चित्र में गड़ी थी।	11. उसकी दृष्टि चित्र पर गड़ी थी।
12. उसने न्यायाधीश को निवेदन किया।	12. उसने न्यायाधीश से निवेदन किया।
13. आजकल राजनीति में अपराधी करण हो गया है।	13. आजकल राजनीति का अपराधी करण हो गया है।
14. वह बाजार में सब्जी लाने गया।	14. वह बाजार से सब्जी लाने गया।
15. राम आज स्कूल से अनुपस्थित है।	15. राम आज स्कूल में अनुपस्थित है।
16. आज संसद में बजट के ऊपर बहस होगी।	16. आज संसद में बजट पर बहस होगी।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/l6dgy4

Online order – https://bit.ly/bstc-notes

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE